बी.एस.ओ.सी.-103 : समाजशास्त्र का परिचय-II

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : BASOH/ BAFSO
पाठ्यक्रम कोडः **BSOC-103**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एस.ओ.सी -103 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-27**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1. मैक्स वेबर के व्याख्यात्मक दृष्टिकोण की व्याख्या कीजिए। 20

2. उदार नारीवादी क्या है? इसके दृष्टिकोण की जांच कीजिए। 20

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3. प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद पर जॉर्ज हर्बर्ट मीड के दृष्टिकोण की चर्चा कीजिए। 10

4. धर्म और विज्ञान के बीच अंतर कीजिए। 10

5. पूंजीवाद और संघर्ष के बीच संबंधों पर कार्ल मार्क्स के दृष्टिकोण की व्याख्या कीजिए। 10

सत्रीय कार्य – III

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6. अलगाव क्या है? 06

7. सामाजिक परिवर्तन को परिभाषित कीजिए। 06

8. परिघटना विज्ञान क्या है? 06

9. संरचनावाद क्या है? 06

10. श्रम विभाजन क्या है? 06

1. मैक्स वेबर के व्याख्यात्मक दृष्टिकोण की व्याख्या कीजिए। 20

उत्तर :

प्रस्तावना

मैक्स वेबर आधुनिक समाजशास्त्र के उन प्रमुख विचारकों में हैं जिन्होंने समाज का अध्ययन केवल बाहरी घटनाओं, संस्थाओं और आँकड़ों के आधार पर करने के बजाय व्यक्तियों की क्रियाओं के पीछे निहित अर्थों को समझने पर बल दिया। उनका व्याख्यात्मक दृष्टिकोण इस मान्यता पर आधारित है कि मनुष्य अपने व्यवहार को अर्थ देता है और दूसरे लोगों के व्यवहार को ध्यान में रखकर क्रियाएँ करता है। इसलिए सामाजिक जीवन को समझने के लिए केवल यह जानना पर्याप्त नहीं है कि कोई व्यक्ति क्या कर रहा है; यह भी जानना चाहिए कि वह ऐसा क्यों कर रहा है और उस क्रिया का उसके लिए क्या अर्थ है।

सामाजिक क्रिया और उसका अर्थ

वेबर के अनुसार समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो सामाजिक क्रिया का अर्थपूर्ण विवेचन करके उसकी दिशा तथा परिणामों का कारणात्मक स्पष्टीकरण करता है। सभी मानवीय गतिविधियाँ सामाजिक क्रियाएँ नहीं होतीं। किसी व्यक्ति का अचानक छींकना जैविक घटना हो सकती है, जबकि किसी अतिथि के आने पर खड़े होकर स्वागत करना सामाजिक क्रिया है, क्योंकि उसका आशय दूसरे व्यक्ति से जुड़ा है। इसी प्रकार परीक्षा की तैयारी, धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेना या विरोध-प्रदर्शन करना सामाजिक संदर्भ और कर्ता की मंशा के अनुसार अलग-अलग अर्थ रख सकता है।

सामाजिक क्रिया का अर्थ केवल कर्ता के भीतर छिपी भावना नहीं है। उसमें अपेक्षाएँ, प्रचलित मान्यताएँ, दूसरे लोगों की संभावित प्रतिक्रियाएँ और परिस्थितियों का ज्ञान भी शामिल होता है। शोधकर्ता को इन्हें समझने का प्रयास करना चाहिए, पर अपनी निजी राय को कर्ता के अर्थ के रूप में नहीं थोपना चाहिए।

वेरश्टेहन अर्थात् अर्थपूर्ण समझ

वेबर की पद्धति का केंद्रीय विचार जर्मन शब्द *Verstehen* है, जिसका सामान्य आशय अर्थपूर्ण या व्याख्यात्मक समझ से है। जब हम किसी व्यक्ति की क्रिया का अर्थ उस व्यक्ति के दृष्टिकोण से समझने की कोशिश करते हैं, तब हम व्याख्यात्मक समझ अपनाते हैं। उदाहरण के लिए, किसी किसान द्वारा फसल का कुछ हिस्सा धार्मिक आयोजन के लिए अलग रखना बाहर से आर्थिक रूप से अनुपयोगी दिखाई दे सकता है; पर उसके सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण में उस निर्णय का नैतिक और धार्मिक महत्त्व हो सकता है।

वेबर की समझ केवल सहानुभूति या कल्पना नहीं थी। उन्होंने प्रत्यक्ष संदर्भ में दिखाई देने वाले व्यवहार की समझ तथा व्यक्ति के उद्देश्यों को समझने के बीच अंतर किया। किसी व्यक्ति को लकड़ी काटते देखकर उसकी गतिविधि पहचान लेना प्रत्यक्ष समझ है; यह जानना कि वह आजीविका, घरेलू जरूरत या धार्मिक आयोजन के लिए लकड़ी काट रहा है, प्रेरणात्मक समझ है। अर्थपूर्ण व्याख्या की विश्वसनीयता को प्रमाण, तुलनात्मक अध्ययन और कारणात्मक विश्लेषण से जाँचना आवश्यक है।